सच्चा धर्म

लेखक परिचय – नाटककार सेठ गोविन्ददास का जन्म सन् 1896 में मध्यप्रदेश के जबलपुर नगर में एक सभ्रांत सेठ परिवार में हुआ। आपकी शिक्षा-दीक्षा घर पर ही हुई। आपका परिवार धार्मिक प्रवृत्ति का था। बारह वर्ष की अवस्था में सेठ गोविन्द दास ने तिलस्मी उपन्यास 'चम्पावती' की रचना की। उस समय आप बाबू देवकी नन्दन खत्री रचित 'चन्द्रकांता' से बहुत प्रभावित थे। बल्लभ सम्प्रदाय के ललित उत्सवों, रामलीला, पारसी नाटक कम्पनी के अभिनयों में आपकी विशेष रुचि थी। सन् 1919 में 'विश्वप्रेम' नाटक लिखा और खेला। इसी वर्ष गांधी जी के प्रभाव में आए और भारतीय राजनीति में भाग लेना प्रारंभ किया। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान अनेक बार जेल यात्राएँ कीं। सन् 1974 में आपका निधन हुआ।

सेठ गोविन्ददास मूलतः नाटककार हैं। आपके एकांकी और नाटक का क्षेत्र अत्यंत व्यापक है। आपने पौराणिक, ऐतिहासिक, राजनीतिक, सामाजिक, नारी समस्या और वैयक्तिक समस्या प्रधान एकांकी, नाटक लिखे हैं। प्रमुख नाटक – 'कर्तव्य', 'कर्ण', 'कुलीनता', 'हर्ष', 'शशिगुप्त', 'शेरशाह', 'अशोक', 'सिंहल द्वीप', 'विजय बेलि', 'विश्व प्रेम', 'सिद्धांत स्तातंत्र्य', 'पाकिस्तान', 'भूदान', 'दलित कुसुम', 'पति', 'सेवापथ', 'बड़ा पापी कौन', 'गरीबी और अमीरी' आदि हैं। 'सप्तरश्मि', 'एकादशी', 'चतुष्पथ', 'पंचभूत' आदि आपके एकांकी संग्रह हैं।

आपने जीवन की विविधता को निकट से देखा है और उसे ही नाटकों, एकांकियों में जीवंत रूप में चित्रित किया है। आप उदात्त विचारों के विकास के लिए तीव्र संघर्ष, मनोरंजक कथा और विशद् चरित्र की योजना अपने एकांकियों में की है। आपकी एकांकियों में दैनिक जीवन से सम्बद्ध कथानक देखे जाते हैं। चरित्र चित्रण और संवाद गतिशील व आकर्षण होते हैं। भाषा भाव, शिल्प आदि के सफल निर्वाह के कारण एकांकियाँ चुस्त-दुरुस्त और प्रभावशाली बन पड़ी हैं।

केन्द्रीय भाव

ऐतिहासिक संदर्भ के माध्यम से व्यक्ति मूल्यों और सामाजिक मूल्यों की रक्षा के साथ राष्ट्रीय चेतना के भाव को परिपुष्ट करने वाला यह एकांकी सेठ गोविन्ददास की क्रांतिकारी सामाजिक दृष्टि को प्रकट करता है।

इस नाटक में शिवाजी अपने कौशल से जब औरंगजेब के कारागार से मुक्त होते हैं, तब वे अपने पुत्र सम्भाजी को दिल्ली के एक महाराष्ट्रीय ब्राह्मण पुरुषोत्तम के घर में छिपा देते हैं। इस घटना की भनक औरंगजेब को लगती है वह इसकी सत्यता के प्रतिपादन हेतु अपने दो सैनिकों को पुरुषोत्तम के पास भेजते हैं। पुरुषोत्तम की सत्यनिष्ठा और आचारनिष्ठा चतुर्दिक चर्चित है। इसे औरंगजेब के सैनिक भी अच्छी तरह से जानते हैं कि पुरुषोत्तम कभी असत्य संभाषण नहीं करते हैं और न किसी के साथ बैठकर भोजन करते हैं। पुरुषोत्तम ने संभाजी को अपना भांजा घोषित कर दिया था। औरंगजेब के सैनिक पुरुषोत्तम से बचनबद्ध होते हैं कि यदि वे अपने भांजे के साथ एक थाली में भोजन कर लेते हैं तो सैनिक स्वीकार कर लेंगे कि पुरुषोत्तम के यहाँ रहने वाला लड़का सम्भाजी नहीं है।

पुरुषोत्तम और उनकी पत्नी अहिल्या के मध्य इस तथ्य को लेकर बराबर चिंतन चलता है कि इस परिस्थिति में क्या करणीय है ? अहिल्या अपने पति को समझाती है कि उन्हें असत्यवादन नहीं करना चाहिए इसी में भलाई भी है। एक तो असत्य वचन करके वे आचार भ्रष्ट नहीं होंगे दूसरे औरंगजेब उन्हें इस हेतु पुरस्कृत भी कर सकता है। पुरुषोत्तम अपना निर्णय पहले ही व्यक्त कर चुके हैं। उन्होंने स्पष्ट कर दिया है – "अनेक बार सत्य के स्थान पर मिथ्या भाषण सत्य से बड़ी वस्तु होती है, जीवन में धर्म से बड़ी कोई चीज नहीं है, धर्म की रक्षा यदि असत्य से होती है तो असत्य, सत्य से बड़ा हो जाता है, अपने इसी सिद्धांत को प्रमाणित करने के लिए पुरुषोत्तम सम्भाजी के साथ एक थाली में बैठकर भोजन करते हैं। पुरुषोत्तम इस प्रकार अपने संपूर्ण आचारनिष्ठ कर्मकांड से विचलित होकर भी अपने व्यक्ति मूल्य और सामाजिक मूल्य की रक्षा करते हैं।"

सम्भाजी की रक्षा का उद्देश्य जहाँ राष्ट्रीय भावना से अनुप्रेरित है, वहाँ आश्रित को अभय का वातावरण प्रदान करने की भावना भी इसमें निहित है इन महत उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए वैयक्तिक आचार निष्ठा को खंडित कर युग-धर्म की महत्ता को भी प्रतिपादित किया गया है। नाटक में पुरुषोत्तम को केन्द्रीय पात्र के रूप में प्रतिष्ठित किया गया है। पुरुषोत्तम की राष्ट्रीय भावना उसके समयानुकूल कर्तव्य भाव को जागृत कर सच्चे धर्म की स्थापना करती है। पुरुषोत्तम की पत्नी स्वार्थ केन्द्रित अधिक है, इसलिए उसका चिंतन व्यावहारिक होते हुए भी तत्कालीन परिस्थिति में धर्मानुकूल नहीं है। संपूर्ण एकांकी परिस्थिति अनुसार परिवर्तित धर्म के स्वरूप को महत्व प्रदान करती है, यह लेखक का क्रांतिकारी दृष्टिकोण है।

सच्चा धर्म

पात्र-परिचय

पुरुषोत्तम	:	दिल्ली निवासी एक महाराष्ट्रीय ब्राह्मण।
अहिल्या	:	पुरुषोत्तम की पत्नी
सम्भाजी	:	शिवाजी का पुत्र
दिलावर खाँ	:	औरंगजेब की खुफिया जमात का एक सरदार
रहमानबेग	:	दिलावार खाँ का मातहत

पहला दृश्य

स्थान : दिल्ली में पुरुषोत्तम के मकान का एक कमरा

समय : मध्यान्ह के निकट

(कमरा छोटे से मकान के छोटे से कमरे सदृश दिखाई देता है, दीवारें स्वच्छता से पुती हुई हैं। दीवारों में जो दवाजे खिड़कियाँ है, उनसे बाहर की एक तंग गली के कुछ मकान दिखाई पड़ते हैं। एक दरवाजे से नीचे उतरने के लिए जीने की कुछ सीढ़ियाँ दिखाई देती हैं, कमरे की छत में काँच की हाड़ियाँ लटक रही हैं। कमरे की जमीन पर आधे में बिछायत है और आधी खाली है। कमरे में पुरुषोत्तम बेचैनी से इधर-उधर टहल रहा है। पुरुषोत्तम की अवस्था लगभग साठ वर्ष की है। वह गेहुएँ रंग और साधारण शरीर का मनुष्य है। सिर के बालों के पीछे शिखा है उसके चारों और छोटे-छोटे बाल और उसके चारों तरफ के बाल मुड़े हुए। मुख पर बड़ी-बड़ी मूँछें हैं। सारे बाल तीन चौथाई से अधिक सफेद हैं। वह लाल रंग का रेशमी उपरना ओढ़े है। उसी रंग का रेशमी सोला पहने हैं। उसके सिर पर श्वेत चन्दन का त्रिपुण्ड लगा हुआ है और वक्षस्थल पर मोटा यज्ञोपवीत दिखाई देता है। अहिल्या का प्रवेश। अहिल्या करीब पचपन वर्ष की अवस्था की गेहुएँ रंग की स्थूल शरीर की स्त्री है, बाल बहुत-से सफेद हो गए हैं। अब मराठा ढंग से लाल चारखाने की साड़ी और वैसी ही चोली पहने हुए है, कुछ सोने के आभूषण भी पहने है।)

अहिल्या : अभी-अभी वही हाल है, कोई निर्णय नहीं हो सका।

पुरुषोत्तम : (खड़े होकर) अहिल्या, यह प्रश्न कोई साधारण प्रश्न है।

अहिल्या : (बैठकर) कम से कम तुम सदृश सत्यवादी-व्यक्ति के लिए तो ऐसे प्रश्नों में असाधारणता नहीं होनी चाहिए। जन्म भर तुम्हारा सत्यव्रत अटल रहा। तुम सदा कहते रहे हो कि जीवन में यदि मनुष्य एक सत्य का आश्रय लिए रहे तो वह सत्य स्वयं ही सारे प्रश्नों का निराकरण कर देता है पर जब मनुष्य सत्य का आश्रय छोड़ मिथ्या का आसरा लेता है, तभी तरह-तरह के प्रश्न उठ खड़े होते हैं।

पुरुषोत्तम : (बैठकर आश्चर्य से) सत्य का आश्रय छोड़ मिथ्या का आसरा! मैं सत्य का आश्रय छोड़ मिथ्या का आसरा ले रहा हूँ?

अहिल्या : और क्या कर रहे हो ? सम्भाजी को शिवाजी तुम्हारे पास रख गए हैं, यह क्या सच नहीं है ? जो लड़का तुम्हारे पास रहता है, वह तुम्हारा भांजा है, यह कहना, सच बोलना है।

पुरुषोत्तम : सम्भाजी को सम्भाजी न कहकर अपना भांजा कहना, शिवाजी मेरे पास सम्भाजी को नहीं रख गए हैं, यह कहना साधारण सच बोलने से कहीं बड़ा सत्य है।

अहिल्या : तुम्हारी सत्य-प्रियता अधिकांश दिल्ली में प्रसिद्ध है। इसी कारण यवन तक तुम्हारा आदर करते हैं। हमारे विवाह को चालीस वर्ष हो चुके परन्तु आज तक मैंने तुम्हारे मुख से कोई मिथ्या वाक्य क्या, मिथ्या शब्द ही नहीं, मिथ्या अक्षर तक नहीं सुना। वही आज तुम बड़ी मिथ्या बात कहकर उसे साधारण सत्य भाषण से बड़ा कह रहे हो।

पुरुषोत्तम : अहिल्या, शास्त्रों में सत्य और असत्य की व्याख्या बड़ी बारीकी से की गई है। अनेक बार सत्य के स्थान पर मिथ्या भाषण सत्य से भी बड़ी वस्तु होती है। जीवन में धर्म से बड़ी कोई चीज नहीं है, धर्म की रक्षा यदि असत्य से होती है तो असत्य सत्य से बड़ा हो जाता है।

अहिल्या : धर्म की रक्षा ! अब तो तुमने और बड़ी बात कह दी। सम्भाजी को अपना भांजा बनाने से तुम धर्म की रक्षा कर सकोगे। दिलावर खाँ कह गया है कि वह उसे तुम्हारा भांजा तब मानेगा, जब तुम उसके साथ बैठकर एक थाली में भोजन करोगे। अन्य के साथ भोजन करने से आपके धर्म की रक्षा हो सकेगी?

पुरुषोत्तम : (उठकर फिर टहलते हुए) अहिल्या यही...यही प्रश्न मुझे व्यथित किए हुए है। जीवन भर मैंने जिस प्रकार धर्म का पालन किया है, उसे तुमसे अधिक और कोई नहीं जानता...नहीं....नहीं भगवान् तुमसे भी अधिक जानते हैं। (फिर बैठकर) मैंने त्रिकाल संध्या, तर्पण, हवन इत्यादि सारे धार्मिक कर्म नियमपूर्वक किए हैं, शौच-अशौच का सदा पूर्ण विवेक रखा है। भक्ष्याभक्ष्य की ओर अधिक ध्यान दिया है। किसी के हाथ का जल तक ग्रहण नहीं किया - वहीं मैं इस चौथेपन में अन्य के साथ बैठकर एक ही थाली में कैसे खाऊँगा, यह प्रश्न मुझे व्यथित - अत्यधिक व्यथित किए हुए है।

अहिल्या : मैंने तो कहा जन्म भर जिसके आश्रय में रहे हो, उस सत्य को न छोड़ो। औरंगजेब के सदृश बादशाह के राज्य में, उसकी राजधानी में रहते हुए भी तुम यह सफल-जीवन उसी सत्य के आश्रय के कारण बिता सके हो। इस चौथेपन में वह आसरा छोड़ने से बुरी और बात नहीं हो

सकती; विशेषकर तब, जब उस आसरे का सुफल तुम देख चुके हो। धर्म की टेढ़ी-मेढ़ी व्याख्याओं में पड़कर अपना जीवन भर का सीधा मार्ग छोड़ अपने कुटुम्ब को नष्ट मत करो।

पुरुषोत्तम : तो मैं यह कह दूँ कि वह लड़का शिवाजी का पुत्र सम्भाजी है, मेरा भांजा नहीं। मिठाई की टोकरी में छिपकर दिल्ली से भागते समय शिवाजी उसे मेरे पास छोड़ गए हैं।

अहिल्या : कम से कम तुम्हें सत्य बात कहने में पशोपेश होना ही न चाहिए।

पुरुषोत्तम : और इसका परिणाम क्या होगा ?

अहिल्या : परिणाम जो कुछ हो। तुम सदा कहते नहीं रहे हो कि सत्य बोलने के सम्मुख परिणाम की ओर मनुष्य को दृष्टि ही नहीं डालनी चाहिए ?

(पुरुषोत्तम सिर नीचा कर विचार-मग्न हो जाता है । कुछ देर निस्तब्धता)

पुरुषोत्तम : (एकाएक सिर उठाकर), नहीं...नहीं ... यह कभी नहीं हो सकता, यह कभी नहीं हो सकता। यह...यह विश्वास घात होगा। ऐसा... ऐसा पातक, जिससे बड़ा पातक सम्भव ही नहीं यह ...यह शरणागत का बलिदान होगा, ऐसा-ऐसा दुष्कर्म जिससे बड़ा हो नहीं सकता।

अहिल्या : पर दूसरी ओर तुम सत्य को तिलांजलि दे रहे हो। अन्य के साथ भोजन कर धर्म-नष्ट होने का प्रश्न तुम्हारे सम्मुख है; और स्वयं के भ्रष्ट होने का नहीं पर सारे कुटुम्ब के नष्ट हो जाने का.....

पुरुषोत्तम : (उठकर टहलते हुए) ओह ! ओह !

(तंग गली के कुछ मकान दिखाई पड़ते हैं। दिलावर खाँ और रहमानबेग खड़े हैं। दोनों अधेड़ अवस्था और गेहुएँ रंग के ऊँचे पूरे व्यक्ति हैं, दिलावर खाँ के दाढ़ी भी है। दोनों उस समय की सैनिक वर्दी लगाए हुए हैं।)

(लघु यवनिका)

दूसरा दृश्य

स्थान : दिल्ली की एक गली

समय : मध्याह्न के निकट

दिलावर खाँ : (विचार करते हुए) पण्डित पुरुषोत्तम राव झूठ बोलेंगे, ऐसा.....ऐसा यकीन तो नहीं होता।

रहमानबेग : जनाब, तमाम देहली में कौन ऐसा होगा जो उन्हें जानता न हो और यह मानता हो कि वे कभी झूठ बोल सकते हैं।

दिलावर खाँ : (उसी प्रकार विचारते हुए) लेकिन रहमानबेग वह लड़का पुरुषोत्तम का भांजा जैसा दिखता नहीं।

रहमानबेग : सिर्फ सूरत से कह सकना कि कौन भांजा है और कौन नहीं, यह तो एक बड़ी मुश्किल बात है।

(कुछ देर निस्तब्धता । दिलावर खाँ गम्भीरता से सोचता है और रहमानबेग उसकी तरफ देखता है।)

रहमानबेग : (कुछ देर बाद) फिर आपने तो पण्डित की बात पर ही यकीन करके मामले को नहीं छोड़ दिया, आपने तो उसे बहुत बड़ा सबूत देने के लिए कहा है। पुरुषोत्तम राव की बात ही काफी है, फिर अगर उस लड़के के साथ बैठकर खाना खा लेता है तब तो शक की गुजांइश ही नहीं रह जाती।

दिलावर खाँ : (सिर उठाकर) हाँ, पुरुषोत्तम किसी अन्य के साथ बैठकर थोड़े ही खा सकता है।

रहमानबेग : हाँ, चाहे जान निकल जाए तो भी न खाएगा।

दिलावर खाँ : पुरुषोत्तम राव के मानिन्द व्यक्ति तो कभी नहीं।

रहमानबेग : कभी नहीं, कभी नहीं ।

दिलावर खाँ : (ऊपर की तरफ देखकर) तो दोपहर हो रही है। पूजा पाठ के बाद उसने दोपहर को ही खाने के वक्त बुलाया था।

रहमानबेग : हाँ, वक्त हो रहा है, चलिए-चलिए।

(दोनों का प्रस्थान)

लघु यवनिका

तीसरा दृश्य

स्थान : पुरुषोत्तम के मकान का एक कमरा

समय : मध्याह्न

(दृश्य पहले के सदृश ही है। पुरुषोत्तम और अहिल्या बैठे हुए हैं। अहिल्या का मुख प्रसन्नता से खिल सा गया है, परन्तु पुरुषोत्तम के मुख पर वैसे ही उद्विग्नता दृष्टिगोचर होती है, पुरुषोत्तम पृथ्वी की ओर देख रहा है।)

अहिल्या : (ऊपर की ओर देखकर) धन्यवाद, अगणित बार धन्यवाद है भगवान् को कि अन्त में सत्य की उसने विजय करा दी। (पुरुषोत्तम की ओर देखकर) दिन भर का भूला-भटका यदि रात को भी घर लौट आए तो वह भूला नहीं कहलाता। उद्वेग के कारण तुमने एक बार मिथ्या अवश्य बोल दिया पर देर..... बहुत देर नहीं हुई, अभी भी समय था। दिलावर खाँ के आने के पहले तक समय था। अब उसको सारी बातें सच-सच कह देने पर मिथ्या भाषण के पाप से मुक्त हो जाओगे। जन्म भर जिस सत्य का आश्रय ले रखा है, उसी की शरण में रहने से कोई आपत्ति भी नहीं आएगी ?

(पुरुषोत्तम कोई उत्तर नहीं देता, अहिल्या उसकी ओर देखती रहती है। कुछ देर निस्तब्धता।)

अहिल्या : (कुछ देर बाद पुरुषोत्तम की ओर देखते हुए) देखा, देखा नहीं, एक केवल एक बार सत्य का आसरा छोड़ते ही कैसी ..... कैसी महान् आपत्ति आई। एक मिथ्या को सत्य सिद्ध करने के प्रयत्न में कितनी मिथ्या बातें कहनी पड़ती हैं, तुम सदृश सत्यवादी से अपने कथन की पुष्टि के लिए प्रमाण, महाभयंकर प्रमाण। तुम्हारा अन्य व्यक्ति के साथ एक थाल में भोजन । ओह ! यह ..... यह कभी सम्भव था।

(पुरुषोत्तम फिर कुछ नहीं बोलता, पर दृष्टि उठाकर अहिल्या की ओर देखने लगता है, अहिल्या चुपचाप उसकी ओर देखती है। कुछ देर निस्तब्धता।)

अहिल्या : (कुछ देर बार) जन्म भर का सारा पूजन-अर्चन समाप्त हो जाता, जीवन भर के सारे नियम व्रत भंग हो जाते। न जाने कितने जन्मों के पुण्यों के कारण इस कुल में जन्म लिया था और ऐसे

कुल में फिर इस जन्म में भी धर्म का कैसा पालन किया था। कभी सन्ध्या न छोड़ी, कभी तर्पण न त्यागा, कभी हवन न छोड़ा, किसी का जल तक पान न किया था। सब ..... सब चला जाता। स्वयं ही भ्रष्ट न होते, परन्तु ..... परन्तु सारा कुल भ्रष्ट हो जाता। लड़कियाँ कुँआरी रह जाती। लड़के की सन्तति का क्या होता? (कुछ रुककर) होता.....होता.....कैसे? ऐसा जन्म भर का सत्कर्म पल भर में नष्ट कैसे हो जाता ? भगवान् कैसे होने देते ?

(पुरुषोत्तम फिर कुछ नहीं बोलता, पर चुपचाप उठकर टहलने लगता है।)

अहिल्या कुछ देर तक बैठे-बैठे उसकी तरफ देखती है और फिर उठकर उसी के साथ टहलने लगती है।

अहिल्या : (टहलते-टहलते) और फिर यह सब किसी अपने के लिए नहीं दूसरे..दूसरे के लिए।

(पुरुषोत्तम चुपचाप खड़ा होकर अहिल्या की ओर देखने लगता है। अहिल्या भी खड़ी हो जाती है।)

अहिल्या : हाँ, क्या ..... क्या प्रयोजन है हमें शिवाजी से और उसके इस पुत्र सम्भाजी से ? दूसरे के लिए हम क्यों अपना इहलोक और परलोक बिगाड़े, स्वयं नष्ट हों और अपने कुल को नष्ट करें ? (कुछ रुककर) सोचो, जरा सोचो तो कहीं औरंगजेब को पता लग जाए कि तुमने शिवाजी के पुत्र को आश्रय दिया और.....और उसे बचाने के लिए झूठ बोले और.....और उस झूठ को सत्य सिद्ध करने के लिए अपने धर्म-कर्म की भी परवाह न कर उसके साथ एक थाल में भोजन तक किया.....तो.....तो..... औरंगजेब के सदृश बादशाह क्या करेगा तुम्हारा और तुम्हारे सारे कुटुम्ब का ?

(पुरुषोत्तम फिर कुछ न कह टहलने लगता है। अहिल्या भी उसके साथ टहलती है। कुछ देर निस्तब्धता)

अहिल्या : (कुछ देर बाद) ठीक.....ठीक समय भगवान ने तुम्हें सुबुद्धि दी। सारा हाल सच-सच कह देने से अच्छा निर्णय हो ही नहीं सकता था। परलोक बचा, क्योंकि किसी और के साथ खाने से जो धर्म जाता वह धर्म बच गया। इहलोक बचा क्योंकि राज्यभय नहीं रह जाएगा..... इतना..... ही नहीं सम्भाजी को पाते ही, तुम्हारे जरिए पाते ही औरंगजेब कितना.....कितना खुश होगा तुम पर।.....कदाचित्.....कदाचित् तुम मनसबदार हो जाओ, तुम न भी हुए.....अर्थात् तुमने यदि मनसबदारी अस्वीकृत भी कर दी तो.....तो मनसबदार हो सकता है हमारा लड़का। अरे ! उन लड़कियों का सम्बन्ध तब अच्छे से अच्छे स्थान पर हो सकेगा।.....कितना.....कितना परिश्रम तुम कर चुके हो इन लड़कियों के लिए योग्य वर ढूँढने का ! बादशाह.....हाँ बादशाह की कृपा के पश्चात् कौन.....कौन वस्तु दुर्लभ रह जाएगी? (कुछ रुककर) और.....और यह सब होगा किस कारण.....उसी.....उसी सत्य की शरण के कारण, जिसका जीवन हाँ, जीवन भर तुमने आश्रय रखा है। (नेपथ्य में 'पण्डित जी पण्डित जी'! शब्द होता है।)

अहिल्या : (जल्दी से) लो.....लो, कदाचित् दिलावर खाँ आ गया। अब.....अब.....सब बातचीत स्पष्ट रूप से कर लो उससे..... (शीघ्रता से प्रस्थान)

पुरुषोत्तम : (जिसके मुख का रंग ही दिलावर खाँ की आवाज सुनकर और ही हो गया है, गला साफ करते हुए खिड़की के पास जा, मुख बाहर निकाल नीचे देखते हुए) अहा हा ? दिलावर खाँ साहब! आइए, आ जाइए।

(दिलावर खाँ और रहमानबेग का प्रवेश)

पुरुषोत्तम : आइए, आइए मैं पूजा से उठ आप ही लोगों का रास्ता देख रहा था। बैठिए, बैठिए।

दिलावर खाँ : (बिछायत पर बैठते हुए) आप भी तो बैठिए पण्डित जी।

(दिलावर खाँ और रहमानबेग बिछायत पर बैठ जाते हैं।)

पुरुषोत्तम : पूजा के पश्चात् भोजन तक मैं किसी वस्त्र आदि का स्पर्श नहीं करता। पहले आपको झंझट से मुक्त कर दूँ।

दिलावर खाँ : (कुछ सहमते हुए) आपके मुआफिक मुआजिज शख्स के लिए जो सबूत मैंने माँगा उसकी कोई जरूरत तो नहीं है, आपकी बात ही सबूत होनी चाहिए, लेकिन.....लेकिन.....आप जानते हैं कि ये सारे सियासी मामलात.....

पुरुषोत्तम : नहीं-नहीं आप कोई संकोच न कीजिए। अपने कर्तव्य का पालन करना धर्म ही है। मैं.....मैं भी आपको पूर्ण रूप से संतुष्ट कर दूँगा। (जिस दरवाजे से अहिल्या गई है, उसी से जाता है।)

रहमानबेग : जनाब अब, भी शक की कोई गुंजाइश बाकी है ?

दिलावर खाँ : वह खाए तो उस लड़के के साथ पहले मेरे सामने।

रहमानबेग : पर खाने के बाद।

दिलावर खाँ : हाँ खाने के बाद तो शक की कोई गुजांइश नहीं रहनी चाहिए।

(दिलावर खाँ और रहमानबेग उत्कण्ठा से जिस दरवाजे से पुरुषोत्तम गया उस दरवाजे की ओर देखते हैं। पुरुषोत्तम के एक हाथ में परसी हुई थाली और दूसरे हाथ में जल का कलश लिए हुए प्रवेश। थाली में भात, दाल, शाक इत्यादि परसे हुए हैं। पुरुषोत्तम की सारी उद्विग्नता नष्ट हो गयी, उसका मुख प्रसन्नता से चमक रहा है। उसके पीछे-पीछे सम्भाजी आता है। पुरुषोत्तम बिना बिछायत की भूमि पर थाली रखता है, उसी के निकट जल का कलश। थाली के दोनों और पुरुषोत्तम और सम्भाजी बैठ जाते हैं। पुरुषोत्तम भोजन का थोड़ा अंश निकाल जमीन पर रखकर थाली के चारों और जल छिड़कता है।)

पुरुषोत्तम : (जल छिड़कते हुए) 'सत्यन्तवर्तेन परिषिञ्चामि' (अब आचमन करते हुए) 'अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा'

(अब पुरुषोत्तम और सम्भाजी दोनों उसी थाली में से खाना आरम्भ करते हैं।)

पुरुषोत्तम : (खाते-खाते) कहिए, खाँ साहब अब..... अब भी आपको विश्वास हुआ या नहीं कि विनायक मेरा भांजा है ?

(दिलावर खाँ का मुख शर्म से झुक जाता है। रहमानबेग कभी दिलावर खाँ की तरफ देखता है कभी पुरुषोत्तम की ओर)

[परदा गिरता है]

अभ्यास

बोध प्रश्न -

अति लघु उत्तरीय प्रश्न :

1. पुरुषोत्तम कौन है ?
2. शिवाजी के पुत्र का क्या नाम था ?
3. शास्त्रों में किसकी व्याख्या बड़ी बारीकी से की गई है ?
4. पुरुषोत्तम किस कार्य को दुष्कर्म की संज्ञा देते हैं ?
5. सत्य का आश्रय छोड़ने का क्या दुष्परिणाम होता है ?

लघु उत्तरीय प्रश्न :

1. सत्य स्वयं ही सारे प्रश्नों का निराकरण कब करता है ?
2. असत्य किन परिस्थितियों में सत्य से बड़ा हो जाता है ?
3. पुरुषोत्तम अपने किन गुणों के कारण सबके सम्मान पात्र थे ?
4. सम्भाजी पुरुषोत्तम के आश्रय में कैसे पहुँचे ?
5. पुरुषोत्तम की दृष्टि में सबसे बड़ा पातक क्या है ?
6. पुरुषोत्तम ने अहिल्या से सत्य और असत्य की क्या व्याख्या की ?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न :

1. पुरुषोत्तम के चरित्र की क्या विशेषताएँ थीं ?
2. पुरुषोत्तम के समक्ष कौन सा धर्मसंकट उपस्थित हुआ ?
3. ''दिन भर का भूला-भटका यदि रात को भी घर लौट आए तो वह भूला नहीं कहलाता'' इस कथन का भाव-विस्तार कीजिए।
4. 'सच्चा धर्म' एकांकी का केन्द्रीय-भाव समझाइए।
5. एकांकी के तत्वों का नाम लिखकर 'सच्चा धर्म' के संवादों पर टिप्पणी कीजिए।

भाषा अध्ययन -

1. निम्नलिखित शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए -
   सत्यवादी, बलिदान, दुष्कर्म, निस्तब्धता
2. निम्नलिखित शब्दों का संधि विच्छेद करके सन्धि का नाम लिखिए -
   शरणागत, पुरुषोत्तम, यज्ञोपवीत
3. 'क' स्तंभ में दिए गए शब्दों का 'ख' स्तंभ में दिए गए शब्दों से सही सम्बन्ध स्थापित कीजिए।

	'क'	'ख'
1.	जिसका ज्ञान कम हो	अशक्त
2.	जिसमें शक्ति न हो	अल्पज्ञ
3.	जिसे क्षमा न किया जा सके	अनुयायी
4.	अनुसरण करने वाला	पुरुषोत्तम
5.	जिसके समान कोई दूसरा न हो	अक्षम्य
6.	जो पुरुषों में उत्तम है	अद्वितीय

ध्यान कीजिए -

अव्ययी भाव समास – इसमें पहला पद अव्यय (प्रधान) और दूसरा पद संज्ञा होता है। समस्त पद में अव्यय के अर्थ की प्रधानता रहती है।

जैसे– प्रतिदिन – दिन–दिन
प्रत्येक – एक–एक के प्रति
यथाशक्ति – शक्ति के अनुसार,
आजन्म – जन्म पर्यन्त
यथा विधि – विधि के अनुसार,
यथारुचि – रुचि के अनुसार
यथार्थ – अर्थ के अनुसार
भरपेट – पेट–भर

तत्पुरुष समास – जिस समास में उत्तर पद प्रधान हो, उसे तत्पुरुष समास कहते हैं। इसमें कर्ताकारक और सम्बोधन को छोड़कर सभी कारकों में विभक्तियाँ लगाकर समास विग्रह किया जाता है।

तत्पुरुष समास के निम्नलखित भेद है –

1. जहाँ पूर्वपद से कर्म कारक की विभक्ति का लोप होता है, वहाँ कर्म तत्पुरुष होता है–

यथा – सुखप्राप्त – सुख को प्राप्त करने वाला
स्वर्ग प्राप्त – स्वर्ग को प्राप्त
माखनचोर – माखन को चुराने वाला
चिड़ीमार – चिड़ियों को मारने वाला
गिरहकट – गिरह को काटने वाला
तिलचट्टा– तेल को चाटने वाला
गगन चुम्बी – गगन को चूमने वाला
गृहागत – गृह को आगत (आया हुआ)

2. करण तत्पुरुष – यहाँ पूर्वपद से करण कारक की विभक्ति का लोप हो, वहाँ करण तत्पुरुष होता है –

यथा– अकाल पीड़ित – अकाल से पीड़ित
मदमस्त – मद से मस्त
ईश्वर प्रदत्त – ईश्वर द्वारा प्रदत्त
मनगढ़त – मन से गढ़ा हुआ
तुलसीकृत – तुलसी द्वारा कृत
मनमाना – मन से माना
दयार्द्र – दया से आर्द्र
रेखांकित – रेखा से अंकित

3. सम्प्रदान तत्पुरुष – जहाँ समास के पूर्वपद से सम्प्रदान की विभक्त 'के लिए' का लोप होता है, वहाँ सम्प्रदान तत्पुरुष होता है।

जैसे– गुरु दक्षिणा – गुरु के लिए दक्षिणा
देशभक्ति – देश के लिए भक्ति
गौशाला – गौ के लिए शाला
रसोईघर – रसोई के लिए घर
राहखर्च – राह के लिए खर्च
सत्याग्रह – सत्य के लिए आग्रह

4. अपादान तत्पुरुष – जहाँ समास के पूर्व पद की अपादान की विभक्ति 'से' (विलग होने के भाव) का लोप हो, वहाँ अपादान तत्पुरुष होता है।

जैसे– ऋणमुक्त – ऋण से मुक्त
पथभ्रष्ट – पथ से भ्रष्ट
धनहीन – धन से हीन
पदच्युत – पद से च्युत
जन्मांध – जन्म से अंधा
भयभीत – भय से भीत

5. सम्बन्ध तत्पुरुष – जहाँ समास के पूर्व पद में संबंध तत्पुरुष की विभक्ति – 'का,के,की',का लोप हो वहाँ संबंध तत्पुरुष समास होता है।

जैसे– अमृतधारा – अमृत की धारा
मृत्युदण्ड – मुत्यु का दण्ड
आज्ञानुसार – आज्ञा के अनुसार
राजमाता – राजा की माता
गंगातट – गंगा के तट
सचिवालय – सचिव का आलय

6. अधिकरण तत्पुरुष – जहाँ अधिकरण कारक की विभक्ति – 'में, पर', का लोप होता है, वहाँ अधिकरण तत्पुरुष समास होता है।

जैसे- आपबीती - आप पर बीती
कार्यकुशल - कार्य में कुशल
गृहप्रवेश - गृह में प्रवेश
देशाटन - देश में अटन
लोकप्रिय - लोक में प्रिय
शरणागत - शरण में आगत

कर्मधारय समास-कर्मधारय का प्रथम पद विशेषण और दूसरा विशेष्य होता है।
(विशेषण+विशेष्य (संज्ञा) = कर्मधारय)

जैसे- महाकवि - महान है जो कवि
नराधम - अधम है नर जो
नीलकमल - नीला है कमल जो
सद्धर्म - सत् है धर्म जो
क्रोधाग्नि - क्रोध रूपी अग्नि
सत्याग्रह - सत्य के लिए आग्रह
वचानमृत - वचन रूपी अमृत
महाराजा - महान है जो राजा
बैलगाड़ी - बैलों से खींची जाने वाली गाड़ी
कापुरुष - कायर है जो पुरुष
वनमानुष - वन में रहने वाला मनुष्य
देहलता - देह रूपी लता
मृगलोचन - मृग के समान लोचन
स्त्रीरत्न - स्त्री रूपी रत्न
पीताम्बर - पीत है अम्बर जो

द्विगु समास - जिस समास का प्रथम पद संख्यावाचक और अन्तिम पद संज्ञा हो, उसे द्विगु समास कहते हैं।

जैसे- दोपहर - दो पहरों का समाहार
त्रियुगी - तीनों युगों का समाहार
चौराहा - चार राहों का समाहार
पंचवटी - पाँच वटों का समाहार
अठन्नी - आठ आनों का समाहार
षट्कोण - छः कोणों का समाहार
सप्तर्षि - सात ऋषियों का समाहार
नवग्रह - नव ग्रहों का समाहार

4. समास किसे कहते हैं। उदाहरण देकर समझाइए।
5. समास के प्रकार लिखिए और प्रत्येक का एक-एक उदाहरण दीजिए।

योग्यता विस्तार

1. 'सच्चाधर्म' एकांकी को कहानी विधा में लिखिए।
2. रंगमंच की सज्जा एवं अभिनय को ध्यान में रखते हुए एकांकी के प्रदर्शन के लिए आवश्यक सामग्रियों की सूची तैयार कीजिए।
3. विद्यालय के किसी कार्यक्रम में इस एकांकी को सहपाठियों के साथ मिलकर अभिनीत कीजिए।
4. शिवाजी और सम्भाजी का चरित्र इतिहास की पुस्तकों से संकलित करें।

शब्दार्थ

यज्ञोपवीत = जनेऊ, एक संस्कार। **त्रिकाल** = सुबह, दोपहर, शाम तीन समय की उपासना। **शौच** = शुद्धि, शुचिता, योगशास्त्र के पंच नियमों में एक (शौच, संतोष, तप, स्वाध्याय, ईश्वर प्रणिधान)। **सत्यवादी** = सत्य बोलने वाला। **अटल** = स्थिर। **अशौच** = अशुद्धि। **निराकरण** = उपाय, समाधान। **भक्ष्याभक्ष** = खाद्य, अखाद्य। **मिथ्या** = झूठ, असत्य। **व्यथित** = दुखी। **कुटुम्ब**=परिवार। **पशोपेश** = उहापोह। **निस्तब्धता** = चुप्पी, सन्नाटा। **मानिन्द** = भाँति तरह। **इहलोक** = यह लोक, यह जीवन। **परलोक** = स्वर्ग। **सियासी मामलात** = राजनीतिक मामले। **उत्कंठा** = लालसा। विलंब न सहने वाली इच्छा। **उद्विग्नता** = परेशानी, चिन्ता, खिन्नता। **अंश** = भाग, हिस्सा।